भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 186

02 फरवरी, 2024 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

आयुर्वेद एवं अन्य पारंपरिक औषधीय पद्धतियों की स्वीकार्यता

186. श्री चंद्र शेखर साहू:
डॉ. प्रीतम गोपीनाथ राव मुंडे:
श्री राहुल रमेश शेवाले:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या आयुर्वेद और अन्य पारम्परिक औषधीय पद्धतियों की व्यापक स्वीकार्यता ने आयुष क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ाया है;

(ख) यदि हां, तो क्या भारत के आयुष क्षेत्र द्वारा वर्ष 2025 तक वैश्विक स्तर पर अपनी बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि किए जाने की संभावना है;

(ग) यदि हां, तो आयुष क्षेत्र के वर्तमान वैश्विक बाजार हिस्से सहित निर्धारित लक्ष्यों का ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षा, अनुसंधान, वैज्ञानिक जांच और आयुर्वेद का प्रचार-प्रसार तर्कसंगत और वैज्ञानिक मूल्यांकन प्रक्रिया के अनुसार किया जाना चाहिए;

(ङ) यदि हां, तो इस संबंध में देश के लिए विशेष रूप से ओडिशा के लिए प्रस्तावित रूपरेखा का ब्यौरा क्या है; और

(च) केन्द्र सरकार द्वारा विशेष रूप से ओडिशा में आयुष क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए/उठाए जाने वाले कदमों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

आयुष मंत्री (श्री सर्बानंद सोणोवाल)

(क), (ख) और (ग): जी, हाँ। डीजीसीआई एंड एस के आंकड़ों पर आधारित इंडिया एक्ज़िम बैंक के शोध के अनुसार, भारत का आयुष और हर्बल उत्पादों का निर्यात दोगुना से भी अधिक हो गया है, जो वित्तीय वर्ष 2014 में 2,208.6 करोड़ (लगभग 401.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर) से वित्तीय वर्ष 2023 में, इस अवधि के दौरान 9.6 प्रतिशत की मजबूत वार्षिक चक्रवृद्धि दर (सीएजीआर) दर्ज करते हुए, बढ़कर 5,051.4 करोड़ (लगभग 628.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर) हो गया है। अप्रैल-नवंबर 2023 के दौरान भारत का आयुष और हर्बल उत्पादों का निर्यात लगभग 405.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया है। इसके अलावा, वैश्विक स्तर पर बाजार हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए आयुष निर्यात संवर्धन परिषद (आयुष एक्सिल) की स्थापना की गई है।

(घ), (ड.) और (च) जी, हां। मंत्रालय ने एनसीआईएसएम अधिनियम, 2020 के प्रावधान के तहत 21.09.2022 को जारी गजट अधिसूचना असाधारण भाग (ii) खंड 3 (ii) के माध्यम से आयुर्वेद शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (एनसीआईएसएम) की स्थापना की है।

आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी पद्धतियों में स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए राष्ट्रीय पात्रता प्रवेश परीक्षा (एनईईटी) अनिवार्य है। आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद के माध्यम से शिक्षा, प्रशिक्षण, अनुसंधान और स्वास्थ्य देखभाल के उच्चतम मानक प्रदान करने के लिए एक अखिल भारतीय संस्थान, 3 राष्ट्रीय संस्थान और एक राष्ट्रीय महत्व का संस्थान अर्थात आयुर्वेद प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए) की स्थापना की है। आयुर्वेद, योग और यूनानी चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षण और उपचार के लिए डब्ल्यूएचओं का बेंचमार्क भी प्रकाशित किया गया है।

केंद्रीय आयुर्वेदिय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) आयुष मंत्रालय के तहत अनुसंधान गतिविधियों को संचालित करने वाली शीर्ष निकाय है, जिसके देश भर में 30 केंद्रीय अनुसंधान संस्थान और क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान हैं। सीसीआरएएस के तहत एक केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान भुवनेश्वर, ओडिशा में स्थापित किया गया है।

आयुष मंत्रालय ने स्वास्थ्य अनुसंधान पर सहयोग और समन्वय को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी), वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर), उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (डीपीआईआईटी), वाणिज्य विभाग (डीओसी), पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफ एंड सीसी) और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के साथ समन्वय बनाया है।

आयुर्वेद के प्रचार और प्रसार के लिए एक आयुष अनुसंधान पोर्टल विकसित किया गया है जहां 30,032 साक्ष्य आधारित शोध लेख सूचीबद्ध हैं। पोर्टल का लिंक https://ayushportal.nic.in/default.aspx है।

आयुष मंत्रालय आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार के लिए ओडिशा सहित देश में अपनी आईईसी (सूचना, शिक्षा और संचार) योजना के तहत राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर आरोग्य मेलों का आयोजन, आयुर्वेद पर्व, राष्ट्रीय सम्मेलन और सेमिनार और प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस मनाने जैसी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन/समर्थन भी करता है।

*****